पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

Booklet

पारम्परिक खिलौने

खिलौने, बच्चों को विशेष रूप से आकर्षित और मोहित करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति विशेष में छिपी रचनात्मक अभिव्यक्ति को परिपूर्ण करने की आवश्यकता के सदंर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आरंभ के वर्षों में बचपन में खिलौने, बच्चों के भावनात्मक और शारीरिक विकास में सहायता करते हैं। सरल परंपरागत खिलौने, बालक को अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करके चरित्रों और वास्तविक जीवन या स्वैर कल्पना के संसार से ग्रहण की गई परिस्थितियों का निर्माण करने का अवसर प्रदान करते हैं।

एक औसत भारतीय के भी इर्द-गिर्द घूमने वाले परंपरागत खिलौने, आकृतियां एवं शिल्प, अवलोकन एवं सहभागिता द्वारा शताब्दियों से प्रचलित रहे हैं। ऐसे तथ्य, शिल्प और आकृतियों की विशाल क्रमबद्धता ने ऐतिहासिक निरंतरता के विशिष्ट बोध को कायम किया है।

खिलौनों के बनाने में प्रयुक्त की गई सामग्री के अनुसार उन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए– मिट्टी, काठ (लकड़ी), धातु, पुराने जीर्ण-शीर्ण वस्त्र, कागज, कागज की लुगदी और अन्य सामग्री। ये सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है तथा सस्ती होने के साथ-साथ बच्चों के खेलने के लिए सुरक्षित भी होती है। खिलौनों को, संबंधित प्रदेशों या राज्यों के अनुसार भी वर्गीकृत किया जा सकता है। परंपरागत खिलौने पशु, पक्षी, मछली, मानव आकृतियां, अमूर्त रूप और प्रतिदिन की उपयोगी वस्तुएं–जैसे पकाने के बर्तन, अनुष्ठानिक वस्तुएं आदि को प्रदर्शित करते हैं। संगीतात्मक और यान्त्रिक खिलौने, गतिशील गुड़ियाएें तथा कई अन्य रूपों एवं प्रकारों में भी खिलौने होते हैं।

सिंधु सभ्यता से प्राप्त मिट्टी के खिलौनों में वृषभ और बन्दर, शायद सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन खिलौनों ने 4000 वर्ष से अधिक पुराने होने पर भी अपने प्रति रूचि जागृत करने तथा बच्चों और वयस्कों को समान रूप से आकर्षित करने की अपनी क्षमता खोई नहीं है। असम में बच्चों के लिए मिट्टी के खिलौने बनाने की परंपरा है। ये खिलौने सूक्ष्म निरूपित विशेषताओं और प्रभावकारी डिजाईनों सहित एक स्वरूप लिए होते हैं। बंगाल, गुजरात और बिहार में रंगीन सजावट के साथ चित्रित मिट्टी के खिलौने होते हैं। पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के कृष्णानगर के मिट्टी के खिलौनों को लघु रूप ग्रामीण दृश्य निर्मित करने और वास्तविक मानव आकृतियां रूपायित करने हेतु उत्कृष्टता से आकार प्रदान किया जाता है। इन खिलौनों को, व्यावसायिक समूहों और विविध समुदायों की परंपरागत वेशभूषा को प्रदर्शित करने हेतु वेशभूषाओं से अलंकृत किया जाता है।

TRADITIONAL TOYS

Toys have a special appeal and fascination for children and play a major role in fulfilling the need for creative expression which is inherent in every individual. In the formative years, toys help in the emotional and physical development of the child. Simple traditional toys allow the child to use his imagination to create characters and situations drawn from real life or from the world of fantasy.

The traditional figures and toy-like artefacts, with which an average Indian is conditioned, both by participation and observation, have existed all through the centuries. The wide range of such artefacts and figures have maintained a remarkable historical continuity.

Toys can be grouped according to the material from which they are made, for example, clay, wood, bamboo, metal, cloth rags, paper, papier mache and others. These materials are easily available, inexpensive and safe for children to play with. Toys can also be classified according to the region or states to which they belong. Traditional toys depict animals, birds, fish, human figures, abstract forms and miniature items of everyday use articles such as cooking vessels, ritual objects, etc. There are also musical and mechanical toys, mobiles, dolls and a host of others.

Among the clay toys from the Indus civilization, the bull and the monkey are perhaps the best known. These toys, though more than 4000 years old, have not lost their ability to interest and charm children and adults alike. In Assam, there is a tradition of preparation of clay toys for children. These toys are abstract in form with pinched features and pierced designs. In Bengal, Gujarat and Bihar there are painted clay toys with colourful decorations. From Krishnanagar in Nadia district of West Bengal the clay toys are delicately shaped to form realistic human figures and create miniature village scenes. These toys are costumed to depict the traditional dress of various communities and occupational groups.

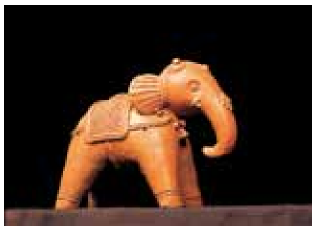

ऐसे बहुत-से खिलौने हैं जिन्हें बनाने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग किया जाता है जैसे बिहार की इकहरी आकृतियां, ओड़िशा के चित्रित काठ के खिलौने और बिहार का गतिशील सिर और पूंछ सहित नारियल के खोल से बना कछुआ, आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा जिले के कोंडापल्ली खिलौने– भोजन पकाना, दूध बिलोना, ढोल बजाना और अन्य गांव के बच्चों की परिचित गतिविधियों में व्यस्त, स्थानीय वेशभूषा में अलंकृत आकृतियों के क्रमबद्ध विन्यास को प्रस्तुत करते हैं। कर्नाटक राज्य के चेन्नापटनम् में रूचिकर, चमकदार रंगों में, काठ (लकड़ी) के बने और रोगन युक्त खिलौने बनाए जाते हैं।

भारत में घास और बांस के विविध प्रकार उपलब्ध हैं और इन्हें बच्चों के लिए खिलौने बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। बिहार की सिक्की घास, अक्सर रंगा कर प्रयुक्त होती है तथा इसे मोड़ कर पशु आकृतियों और टोकरियों के जटिल आकारों में बनाया जाता है। प्राकृतिक सामग्री जैसे– सरकण्डा, पत्तियों और मिट्टी से, बच्चों के लिए विविध प्रकार के झुनझुने और संगीत वाद्य भी निर्मित किए जाते हैं।

पुराने कपड़े के जीर्ण-शीर्ण टुकड़ों को भी बच्चों के लिए खिलौने बनाने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। गुजरात और राजस्थान में अक्सर सुनहरी तथा चमकीली पन्नियों से सजे खिलौने प्राप्त होते हैं। बहुत नन्हें बच्चों के लिए पालने पर डाला जाने वाला सजावटी वस्त्र और कांच की कढ़ाई से कपड़े पर बनी गतिशील आकृतियां, हवा में लहराते पुष्प बल्लड़ एवं सीप शिल्प आज भी लोकप्रिय हैं।

खिलौने, अनुष्ठानों से भी जुड़े होते हैं– जैसे बच्चे, गुड़ियाओं को जन्माष्टमी, दशहरा जैसे त्यौहारों के लिए तैयार करते हैं, वस्त्राभूषित करते हैं। बच्चे खेलते समय अपने कौतूहल और काव्य कल्पना से स्वयं के लिए खिलौने बनाते हैं। जैसे एक छड़ी शानदार घोड़े या शक्तिशाली धनुष के रूप में परिवर्तित हो जाती है। ये बच्चे ही होते हैं, जो खिलौने या गुड़िया को एक नया जीवन (स्वरूप) प्रदान करते हैं।

तकनीकी नवीनीकरण ने परंपरागत खिलौनों के महत्व को कम कर दिया है। फिर भी ऐसे खिलौनों को बनाने की कला भारत के बहुत से भागों में आज भी प्रचलित है।

हम आशा करते हैं कि इस पैकेज में प्रस्तुत खिलौनों का छोटा-सा संग्रह हमारे देश के सभी प्रदेशों में उपलब्ध खिलौनों के विविध प्रकारों में छिपी परंपरागत तकनीक, यान्त्रिकी, सौन्दर्य बोध और सुन्दरता को समझने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा। सी सी आर टी-बच्चों हेतु खिलौने बनाने का प्रत्येक पैकेज खिलौनों में प्रयुक्त होने वाली एक विशिष्ट सामग्री पर प्रकाश डालेगा, जैसे–कागज, मिट्टी, घास आदि।

There are a large number of toys which are made of locally available resources, such as twig figures from Bihar, the painted wooden toys from Odisha and the coconut shell tortoise with moveable head and tail from Bihar. The Kondapalli toys from Vijayawada district in Andhra Pradesh provide an array of figures dressed in the local costume engaged in activities such as cooking, churning milk, drumming and others familiar to village children. From Chennapatnam in Karnataka state, wood and lacquered toys are prepared in delightful bright colours.

In India, a wide variety of grass and bamboo is available and is also used for the preparation of toys for children. Sikki grass from Bihar, which is sometimes coloured, is bent and woven into intricate shapes of animal figures and baskets. A variety of rattles and musical toys are also made for children out of natural material like reeds, leaves and clay.

Old cloth rags are used to prepare toys for children. They are often decorated with touches of gold and silver tinsel such as the toys from Gujarat and Rajasthan. For very small children, cradle decorations and mobiles in cloth with mirror work, shells and tassles are still popular in Gujarat and other parts of India.

Toys are also associated with rituals—with children dressing the dolls for festivals such as Janamashtami, Dussehra, etc. Children with their keen and poetic imagination make toys for themselves while they are playing. A stick is transformed into a magnificent horse or into a mighty bow. It is the child who transforms the toy or doll and gives it a life of it’s own.

Technological innovations have overshadowed the traditional toys, yet the art of making such toys still exists in many parts of India.

We hope that the small collection of toys presented in this Package will provide inspiration to understand the aesthetic and beauty, the traditional technology and mechanics in the vast variety of toys available in all regions of this country. CCRT will attempt to bring out a series of Cultural Packages on ‘How-to-make Toys’ for children. Each package will focus on a particular material such as, paper, clay, grass etc.

छात्रों और अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

1. भारत के मानचित्र में खिलौने निर्माण हेतु प्रसिद्ध निम्नलिखित शहरों को अंकित कीजिए। इन शहरों में से प्रत्येक में पाए जाने वाले प्रमुख खिलौनों का वर्णन कीजिए। उदाहरणार्थ खिलौनों के नाम, प्रकार, प्रयुक्त सामग्री, प्रयुक्त तकनीक आदि :-

   वाराणसी

   लखनऊ

   मथुरा

   चित्तौढ़गढ़

   कोंडापल्ली

   त्रिचूर

   सावंतवाड़ी

   तिरूअन्नतपुरम

   शेंवपुरकलां

   मुरैना

   चेन्नापटनम्

   तिरूपति

   बस्तर

   गोपालपात्रा

   बीरभूम

   बांकुरा

   गोरखपुर

   बालेश्वर

   चराईल

   वारंगल

   आपके भ्रमण के दौरान, जब आपको खिलौने निर्माण के संबंध में अन्य शहरों का पता चले तब इस सूची में उनके नाम जोड़ दीजिए।

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

1. On a map of India, mark the following cities which are famous for toy production. Give descriptions such as name and type of toys, material and technique used for making toys in each of the cities :

   Varanasi

   Lucknow

   Mathura

   Chittorgarh

   Kondapalli

   Trichur

   Savantvadi

   Trivandrum

   Sheopurkalan

   Muraina

   Chennapatnam

   Tirupati

   Bastar

   Gopalpatra

   Birbhum

   Bankura

   Gorakhpur

   Baleshwar

   Charial

   Warangal

   You may add to these places as you explore other cities by visiting them.

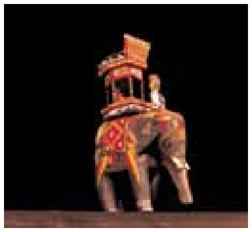

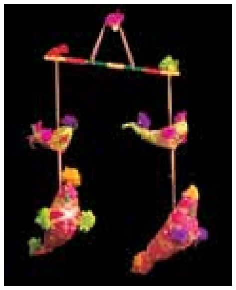

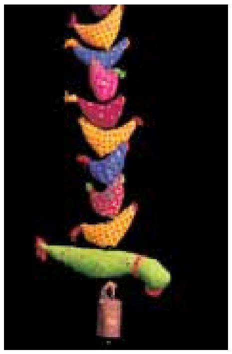

2. कुछ परंपरागत खिलौनों को बनाते समय प्रयोग में लाए जाने वाले वैज्ञानिक सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

3. खिलौनों से संबंधित विविध पौराणिक कथाओं, उपाख्यानों, सूक्तियों, गीतों, कविताओं, दोहों, द्विपदियों और लोक गीतों का संग्रह कीजिए। आप स्वयं भी कुछ गीतों की रचनाकर अपने खिलौनों के संग्रह को समृद्ध कर सकते हैं।

4. विभिन्न कालों में मिट्टी के कार्य/मृण्मूर्ति (पक्की मिट्टी) कला विषय पर हस्तपुस्तिका तैयार कीजिए। आप इसमें दी गई जानकारी को अधिक सूचनापरक बनाने के लिए इसमें रेखाचित्र और फोटोग्राफ्स भी दे सकते हैं।

5. आप ''कागज की खोज (आविष्कार) और निर्माण (उत्पादन)'' की कहानी पर एक शैक्षिक सहायता सामग्री तैयार कर सकते हैं।

6. हाथ द्वारा बनाए जाने वाले कागज के कारखाने का दौरा आयोजित कीजिए और हाथ द्वारा बनाए जाने वाले कागज तथा मशीन से बने कागज के उत्पादन (निर्माण) का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

7. कागज के विभिन्न उपयोगों की सूची को प्रलेखित कीजिए।

8. कागज से आप जिन खिलौनों को बना सकते हैं, उनकी सूची बनाइए और इन्हें कैसे बनाया जाता है, समझाइए।

9. ऑरिगेमी (कागज कार्य) तथा स्टेंसिलिंग की कला को सिखाने के लिए व्यावहारिक कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं तथा कक्षा में तैयार की गई सामग्री प्रदर्शित की जा सकती हे।

10. बेकार कागज से बने खिलौनों की स्कूल में प्रदर्शनी लगाइए। अन्य स्कूलों के छात्रों को भी इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।

11. धातु के खिलौने बनाने की पद्धति को समझिए। धातु के खिलौने बनाने के लिए पश्चिम बंगाल स्थित बांकुरा में रहने वाले छोटे से समुदाय-माल्सु परिवारों और अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीक और पद्धति पर जानकारी एकत्रित कीजिए।

2. Explain the scientific principles used while making certain traditional toys.

3. Collect various mythological stories, anecdotes, quotations, songs, poems, *dohas,* couplets, folk tales describing toys. You may also try to compose poems and songs on your collection of toys.

4. Prepare a handbook on the 'Art of Clay Terracotta' through the ages. You may add line drawings and photographs to make it more informative.

5. You may prepare a teaching aid on the story of 'Invention and production of paper'.

6. Organise a visit to a hand-made paper factory and make a comparative study of hand-made paper and machine made paper.

7. List and document the various uses of paper.

8. Make a list of toys you can make with paper—describe how they are made.

9. Classes may be conducted to teach the art of Origamy and stencilling. The materials prepared in this class can be displayed.

10. Put up an exhibition of toys made of waste paper. School students of other schools may be invited to participate.

11. Find out the traditional method of 'cire perdue' in making of metal toys. Try and collect information on the technique and method used by Mals—a small community found in Bankura, West Bengal and other adjacent areas for making metal toys.

12. प्राचीन भारतीय सभ्यता तथा विश्व की अन्य सभ्यताओं में पाए जाने वाले खिलौनों का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

13. धार्मिक अनुष्ठानों और त्यौहारों में प्रयुक्त खिलौनों पर जानकारी एकत्रित कीजिए।

14. निकटतम गुड़िया संग्रहालय की यात्रा करें और विविध वेशभूषाओं से अलंकृत गुड़ियाओं का अवलोकन कर स्थान विशेष के जीवन, भौगोलिक विशेषताओं और निवासियों की संस्कृति के विषय में सीखिए।

15. अन्य स्थानों, नगरों या राज्यों का दौरा किए जाने पर, वहां के परंपरागत खिलौने और गुड़ियों के विषय में जानकारी एकत्रित करें।

16. आप निम्नलिखित सामग्री से कौन-से खिलौने बना सकते हैं :

सामग्री	**खिलौने**
बुरादा	
नारियल का खोल	
समुद्री सीप	
घास/बांस	
कपड़ों के पुराने टुकड़े	

17. प्रथम पुरूष में निम्नांकित विषयों पर कहानी लिखें :
   : खिलौने बंदर के रूप में मिट्टी कैसे परिवर्तित हुई,
   : कोंडापल्ली में पेड़ की टहनी/तना कैसे खिलौना बन गया।
   : सिंधु सभ्यता में तांबे से वृषभ या ओड़िशा में धातु का टुकड़ा कछुआ या हिरण कैसे बन गया।

18. कक्षा को कुछ समूहों में बांटिए। प्रत्येक समूह को विविध प्रकार की सामग्री का प्रयोग करते हुए कम-से-कम तीन या चार खिलौने बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

12. Make a comparative study of the traditional toys found in ancient Indian and other civilizations of the world.

13. Collect information on toys used in rituals and festivals.

14. Visit the nearest dolls museum, observe and learn from the costume dolls about the lives, geo-physical features and culture of people living in a particular place.

15. On your visits to other places, towns or states, collect information on traditional toys and dolls.

16. What toys can you make with the following materials :

Material	**Toys**
Saw dust	
Coconut shell	
Sea shell	
Grass/bamboo	
Old pieces of cloth	

17. Write a story in the first person of :
   : how clay got transformed into a toy monkey;
   : how a branch/trunk of tree became a toy in Kondapalli.
   : how a piece of metal became a tortoise or deer in Odisha or copper bull in the Indus Civilization;

18. Divide the class into a number of groups, each group may be encouraged to make at least 3 or 4 toys using a variety of materials.

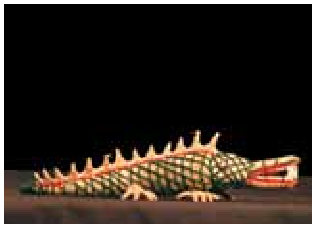

19. अपनी कक्षा के छात्रों को बाल मजदूर, शारीरिक रूप से विकलांग या समाज के आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करें। इन बच्चों को कम लागत की सामग्री से खिलौने बनाना सिखाया जा सकता है।

20. छात्रों के लिए स्क्रैप बुक (चित्र पुस्तक) बनाने हेतु, स्कूल में छोटा खिलौना संग्रहालय स्थापित करने के लिए खिलौने तैयार करने हेतु गतिविधियां आयोजित कीजिए। सभी खिलौनों को लेबल (नामांकन) लगाकर रखा जा सकता है और छात्र इन्हें अन्य स्कूलों में भी ले कर जा सकते हैं।

: खिलौने हेतु प्रयुक्त सामग्री।

: खिलौने बनाए जाने वाली जगह के नाम।

: खिलौने बनाने में प्रयुक्त तकनीक।

19. Encourage your class students to work with street children, physically handicapped children or those belonging to economically deprived sections of society. They can take inexpensive material and teach them to make toys.

20. Organise activities for children to make scrap books, collect or make toys to set up a small toy museum in the school. All the toys can be kept in a box and labelled and the students can take these to other schools.

Organise quiz programmes on :

: Materials used for making toys

: Name of place where the toy is made

: Technique used in making the toy.

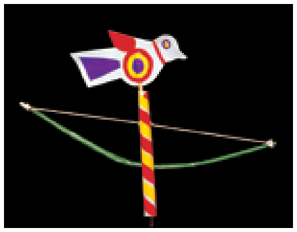

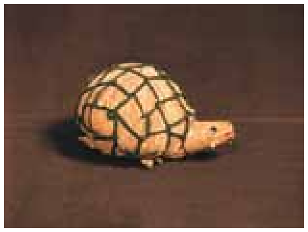

Illustrated Cards

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

1. बन्दर, टेराकोटा

मिट्टी के कार्य की कला स्वयं मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन है। कुम्हार के चाक पर बर्तन आदि बनाए जाने वाले मिट्टी के कार्य के लिए नदियों के किनारों पर आसानी से उपलब्ध बहुत ही महीन मिट्टी सर्वाधिक उपयोगी होती है।

भारत में, प्राचीन काल से ही मिट्टी का प्रयोग न केवल इमारत (भवन) हेतु ईंटें बनाने के लिए बल्कि बर्तन, कटोरे, पात्र (डिब्बे), सजावटी वस्तुएं और खिलौने बनाने के लिए भी किया जाता रहा है।

हड़प्पा से मिट्टी के बने एक बन्दर की अत्यंत वास्तविक प्रतिकृति प्राप्त हुई है।

यह बंदर एक स्तंभ पर चढ़ रहा है, जिसे उसने मजबूती से अपने दोनों हाथों से पकड़ा हुआ है। आज भी यह खिलौना सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

1. Monkey, Terracotta

The art of clay work is as old as man himself. Very fine earth which is easily available along the banks ol the rivers is most suitable for wheel pottery.

In India, clay has been used from ancient times, not only to make bricks for buildings but also to make useful objects like pots, bowls, containers and decorative pieces and toys.

A most realistic representation of a monkey made of clay, climbing up a pole which he grips firmly with both hands and feet, has been found in Harappa. This toy which you see in the picture, fascinates children of all ages even today.

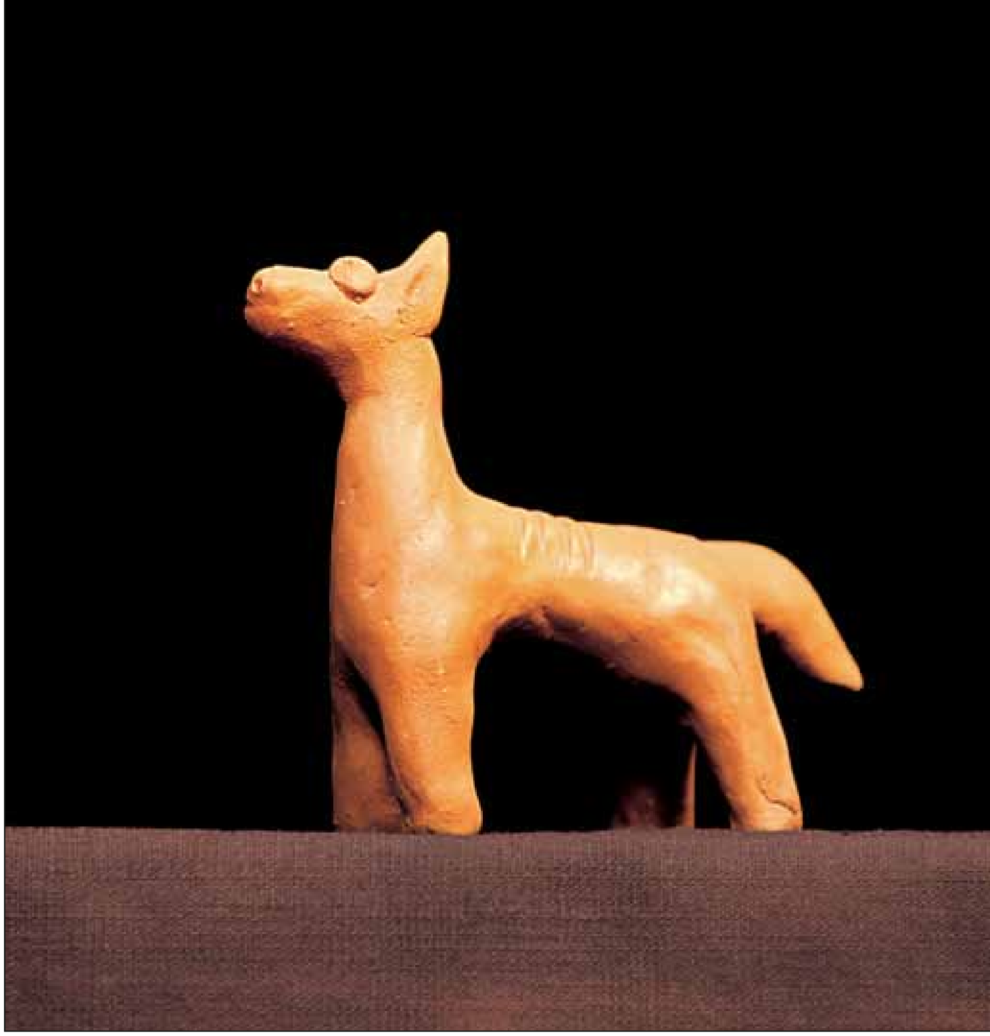

2. जानवर, टेराकोटा

सभी गुड़ियाऐं और खिलौने अत्यंत आनंद का स्रोत होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी होते हैं। यह खिलौने कल्पना लोक और वास्तविकता के संसार के बीच पुलों की भांति कार्य करते हैं, जहां बच्चे दोनों संसारों में बहुत ही सरलता से यात्रा करते हैं। अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के लिए मनुष्य द्वारा चुनी गई विविध सामग्रियों में से सबसे सरल है– मुलायम और कुट्टनीय मिट्टी।

सभी ओर से देखे जा सकने वाले शिल्प तथा चाक पर मिट्टी से बनी आकृतियों का रसास्वादन करने तथा टिकाऊ बनाने के लिए उन्हें पकाया जाता है इन पर मिट्टी से ही कम उभारवाली आकृतियां भी बनाई जाती हैं। भारत के बहुत से भागों में, मिट्टी द्वारा निर्मित पक्की आकृतियों को मन्नत के चढ़ावे के लिए बनी आकृतियों को बच्चे खिलौने के रूप में भी प्रयोग में लाते हैं। भारत के प्रत्येक स्थान पर बनने वाली मिट्टी द्वारा बनाई गई आकृतियों का स्वरूप और अलंकरण की शैली भिन्न-भिन्न होती है।

2. Animals, Terracotta

All dolls and toys are a source of great delight and are also educative as they act as bridges between the worlds of fantasy and reality from which children journey back and forth with great ease. Among the various materials chosen by man for expressing his creativity, the simplest is soft and malleable clay.

Figurines in the round made in clay are baked in order to make them durable, low relief work is also done in clay. In many parts of India, terracotta figures are made as votive figures. After offerings, these votive figures are used by children as toys. The style of form and decoration in terracotta varies from place to place in India.

In this picture, we see a few examples of animals made of clay.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

3. किसान, टेराकोटा, नादिया, पश्चिम बंगाल

मिट्टी, मनुष्य को प्रकृति की भेंट है और यह बहुत ही आसानी से उपलब्ध सामग्री है, जिसका साधारण से बर्तन से लेकर सर्वाधिक परिष्कृत एवं पक्की आकृतियों जैसी विविध वस्तुएं बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। भारतीय खिलौना निर्माता कछारी मिट्टी से लेकर लकड़ी, बेकार कागज, कपड़े के टुकडों (चिंदों), बेंत, घास और बांस के डंडों एवं पुराने टिन के समान बेकार सामग्री जैसी लगभग प्रत्येक उपलब्ध सामग्री के खिलौने बनाते हैं। खिलौने बनाने के पीछे उनका उद्देश्य बच्चों को आनंद प्रदान करना, शिक्षित करना और उनकी रचनात्मकता का विकास करना होता है। ये खिलौने, बच्चों के स्वरूप और बनावट (संरचना) लिए रंग और डिज़ाईन तथा प्रकाश और ध्वनि के विभिन्न पहलुओं को सामने लाते हैं।

भारत के प्रत्येक प्रदेश में खिलौनों की एक विशिष्ट परंपरा पाई जाती है। प्रस्तुत चित्र में, हम पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के कृष्णानगर के मछुआरे या किसान की एक रूप प्रतिकृति देख सकते हैं।

विश्व के सभी भागों में बने विभिन्न संग्रहालयों में पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में बनने वाले खिलौने देखे जा सकते हैं।

3. Farmer, Terracotta, Nadia, West Bengal

Clay is nature's gift to man and is the most easily available material, which is used for making a variety of objects from the simple pot to the most refined terracottas. The Indian toy makers use almost every available material, from alluvial soil to wood, from waste paper to rags, from cane, grass and bamboo shafts to scrap like old tin to make toys which aim to educate and develop the creativity of the child. These toys provide the children their first exposure to form and texture, colour and design, light and sound.

A distinctive tradition of toys is found in every region of India. In this picture, we see a realistic miniature model of a farmer or fisherman from Krishnanagar in Nadia district of West Bengal.

Toys made in Nadia can also be seen in museums in different parts of the world.

4. बाउल गायक, टेराकोटा, नादिया, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के कृष्णानगर में बनने वाली मिट्टी की गुड़ियाएं तथा खिलौने अपने उत्कृष्ट आकार और यथार्थवादी डिज़ाइन के लिए प्रसिद्ध हैं। सूक्ष्मतर विवरणों की प्रस्तुति के लिए इन खिलौनों को बनाने के लिए बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। अत: इन खिलौनों व गुड़ियाओं को कुशल हाथों से निर्मित किया जाता है। ऐसे खिलौने बनाने के लिए स्थानीय नदी ''घुरनी'' के किनारे की मिट्टी को प्रयोग में लाया जाता है। प्रत्येक गुड़िया को अति सावधानी से विभूषित किया जाता है। इन खिलौनों को सामान्यत: ''वेशभूषा गुड़ियों'' के नाम से जाना जाता है। इनका शैक्षिक उद्देश्य भी होता है।

प्रस्तुत चित्र में हम एक गायक संगीतकार को देख सकते हैं। इसे बाउल गायक नाम के प्रचलित रूप में जाना जाता है। गायक के हाथ में गोपी यंत्र नामक वाद्य है, जिसे कभी-कभी एकतारा के नाम से भी जाना जाता है। बाउल गायक परंपरागत भक्ति गीत गाते हैं।

4. Baul Singer, Terracotta, Nadia, West Bengal

Clay dolls and toys from Krishnanagar in Nadia district of West Bengal are known for their fine shape and realistic design. These toys which require much attention for finer details are moulded by the hands. Clay from the banks of the local river Ghurni is used. Each doll is meticulously costumed. These toys generally known as ‘Costume dolls’ also have an educational purpose.

In this picture, we see a musician, popularly known as a *‘baul’* singer of Bengal holding an instrument. *gopi yantra,* also sometimes called the *ek tara.* The baul singers sing traditional devotional songs.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

5. तीन बन्दर, नारियल जटा घास, ओड़िशा

भारत में घास तथा अंतग्रंथित पत्तों से दैनिक प्रयोग में आने वाली और सजावटी वस्तुएं बनाने की एक प्राचीन परंपरा है। चूंकि इस विधि में नष्ट होने वाली प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है, अत: आज इस प्रकार की प्राचीन वस्तुएं उपलब्ध नहीं हैं। नारियल जटा घास से न्यूनतम औजारों के प्रयोग के साथ बने खिलौने सौन्दर्यबोध रूप में रोचक होते हैं। मनुष्य को प्रकृति की भेंट-घास, को कुछ बनाने के लिए प्रयोग में लाने की प्रथा एक भावनात्मक संतुष्टि भी प्रदान करती है।

गुड़ियाएें और खिलौने पौराणिक तथा दंत कथाओं के वर्णन में सहायक सिद्ध होते हैं जैसे–भारत के विविध प्रदेशों की कथा-कथन की शैलियां आदि।

प्रस्तुत चित्र में, हम तीन प्रसिद्ध बन्दरों की आकृति को देख सकते हैं जो हमें बुरा न देखने, न सुनने एवं न बोलने की शिक्षा देते हैं।

5. Three Monkeys, Coir Grass, Odisha

The use of grass and interlacing leaves for making functional articles and objects of beauty has a very old tradition in India. Because of the perishable nature of materials used, ancient works have not survived. Toys made out of coir grass with the minimum of tools are aesthetically pleasing and working with grass, which is nature's gift to man, also gives one emotional satisfaction.

The dolls and toys serve as aids to narration of myths and legends like the scroll paintings of various regions of India.

In this picture, we see three famous monkeys that teach us to follow eternal values of not to see, hear and speak evil of others.

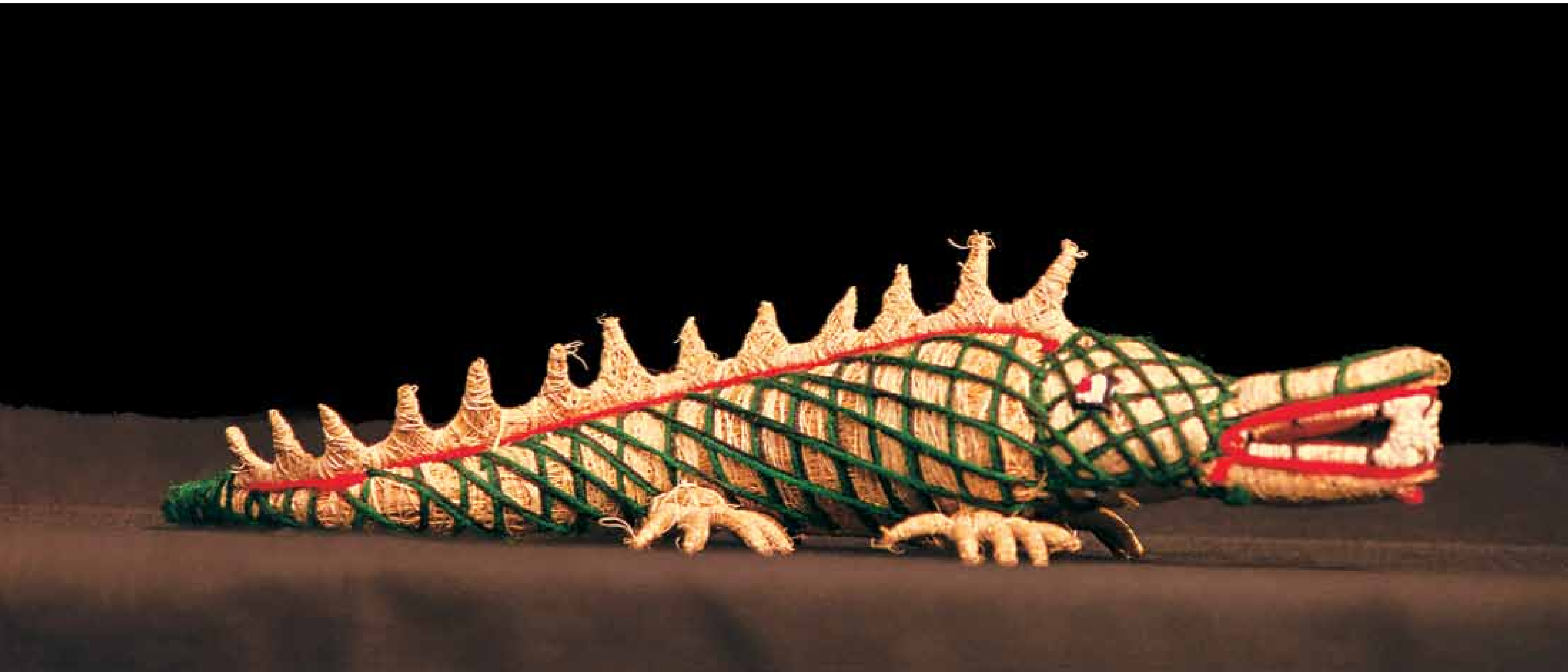

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

6. कछुआ और मगरमच्छ, नारियल जटा घास, ओड़िशा

भारत में उपलब्ध अधिकांश परंपरागत खिलौने, डिज़ाइन और उन्हें बनाने में प्रयुक्त तकनीक के क्षेत्र में अद्वितीय होते हैं। स्थानीय तौर पर हाथ एवं कम औजारों को प्रयोग करते हुए बनाए जाने वाले इन खिलौनों द्वारा प्राप्त अनुभव को बड़े पैमाने पर उद्योगों द्वारा निर्मित किए जा रहे एक समान प्राकृति के खिलौनों के साथ तुलना नहीं की जा सकती।

ग्रामीण जीवन में पशु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और शहर के निवासियों में इनके प्रति चिरस्थाई आकर्षण होता है। बहुत-से पशुओं संबंधी खिलौने कुछ स्थानीय भिन्नताओं के साथ सभी प्रदेशों में पाए जाते हैं।

अन्य राज्यों की ही भांति, ओड़िशा में नारियल जटा घास का, खिलौने बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। नारियल जटा घास को गूंथा, कुंडलित या चटाईदार बनाया जाता है और अक्सर ऐसी सामग्री से गुड़ियाऐं, हाथी, अन्य पशु (जानवर) और लटकाने वाली गतिशील वस्तुएं तथा लघु रूपी वृक्ष बनाए जाते हैं। प्रस्तुत चित्र में हम नारियल जटा घास से बने दो सुन्दर खिलौने-एक कछुआ और एक मगरमच्छ देख सकते हैं।

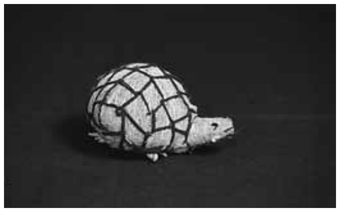

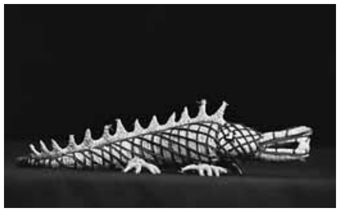

6. Tortoise and Crocodile, Coir Grass, Odisha

Most of the traditional toys available in India are unique in design and the technique used in making them. The experience provided by these locally made toys cannot be compared with the mass produced unicultural toys made by the industry.

Animals play a large role in rural life and have a perennial fascination for the urban dweller. Many of the animal toys are common to all regions, with local variations.

Like other states, in Odisha also coir grass is used for making toys. The coir grass is twined, coiled or matted and usually dolls, elephants and other animals and hanging mobiles and miniature

trees are made from this material. In this picture, we see two toys a Tortoise and a Crocodile made of coir grass.

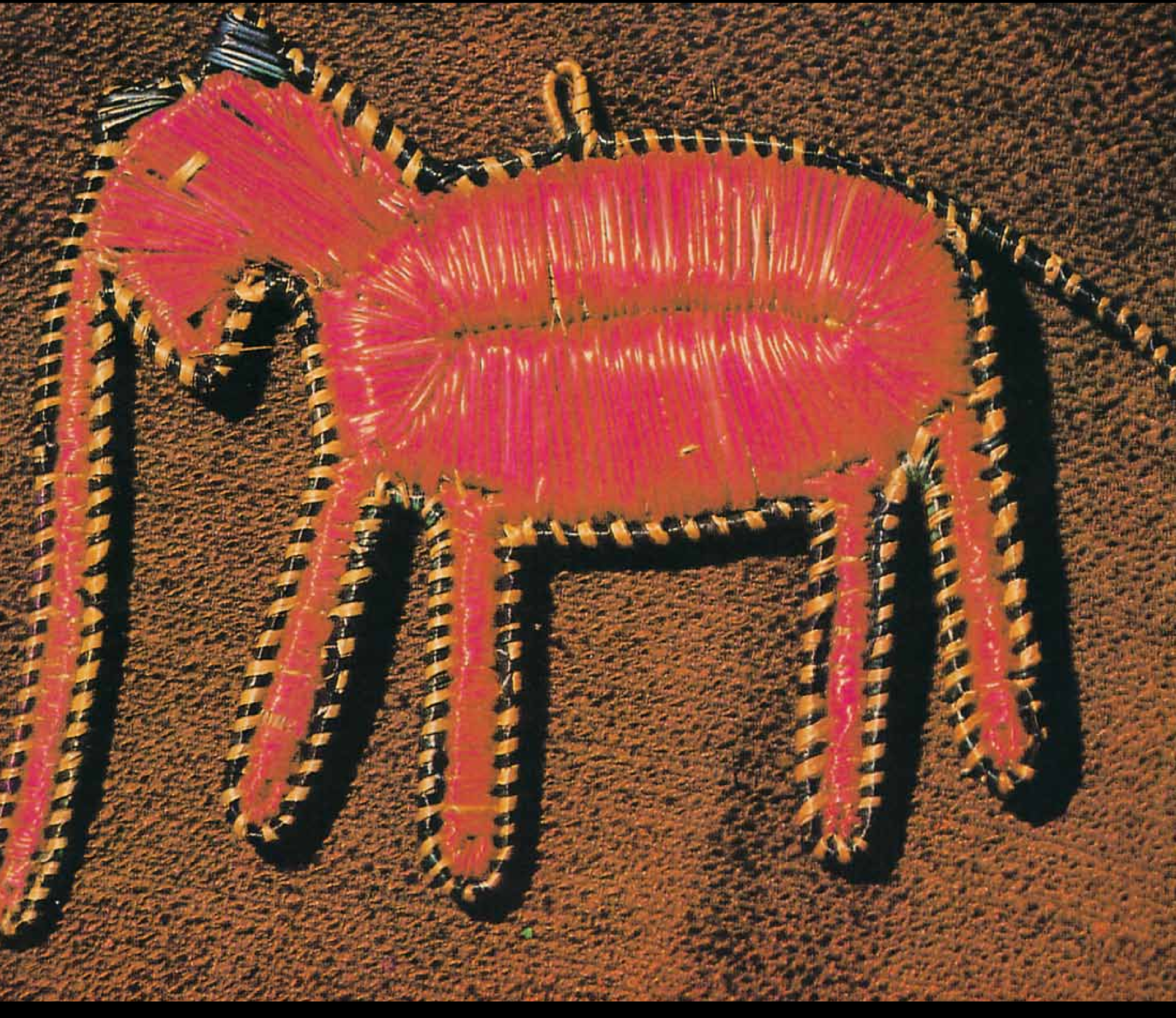

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

7. हाथी, सिक्की घास, बिहार

सामान्यत: परंपरागत खिलौने असाधारण रचनात्मक संकल्पनाओं (विचारों) पर आधारित होते हैं। पृथ्वी की प्रत्येक घास की थिगली, प्रत्येक पत्ते और रेशे को सुन्दरता, उपयोगिता की वस्तु या फिर मनोरंजन के लिए ढाला जा सकता है, आकार दिया जा सकता या बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए तमिलनाडु के तुरूनेलवेल्ली जिले के पटट्ामड़ी स्थान पर साधारण घास को बुनकर शायद विश्व की सर्वाधिक नाजुक चटाईयां बनाई जाती हैं।

यह भी उतना ही आश्चर्यजनक है कि अपनी मिथिला चित्रकला के लिए प्रसिद्ध बिहार स्थित मधुबनी में सिक्की घास को अनुकूल वस्तु पर लपेट कर, कुंडलीकृत करके, तथा फिर चटाईकृत करके खिलौने बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस सुनहरी पीली तिनके समान घास को आकर्षक रंगों में रंगा जाता है, जिससे अक्सर गुड़ियाएं, हाथी, लटकाने वाले गतिशील खिलौने बनाए जाते हैं।

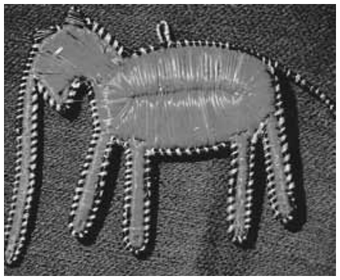

7. Elephant, Sikki Grass, Bihar

Traditional toys are generally based on remarkable creative concepts. Every sod of earth, every leaf and fibre can be moulded, given a shape or woven into an object of beauty, utility or for entertainment. At Pattamadi in Turunelveli district of Tamil Nadu, for instance, plain grass is woven into what are perhaps the worlds' most delicate mats.

In Bihar, which is famous for its Mithila paintings, sikki grass is used for making toys by twining, coiling and matting the grass. The golden yellow straw like grass is dyed in vibrant colours from which mats and toys, usually, dolls, elephants, hanging mobiles, etc. are made.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

8. झुनझुना, घास, उत्तर प्रदेश

विशेष प्रकार की लचीली घास और डंठलों (डंडियों) को करवटें देकर और गूंथ कर ऐसी वस्तुएं भी बनाई जाती हैं, जिनका विशेष उपयोग होता है। सोच समझ कर उत्तम डिज़ाइन के भारत के परंपरागत खिलौने इस बात के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। सुन्दरता और क्रियाशीलता का मूल विचार हमारे देश में पाए जाने वाले खिलौनों की विविधता में कायम होता है। दैनिक जीवन की वस्तुओं में बालक जो रंग, आकार और सामग्री देखता है उनसे उसे हमारे मंदिरों, मस्जिदों व शिल्पकला आदि में छिपे सौन्दर्य को समझने का प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

भारत में हमें मिट्टी से बने पक्के झुनझुने से लेकर विशेष ध्वनि उत्पन्न करने वाले बीज या कंकड़ युक्त ताड़ की पत्तियों से बने झुनझुनों की विविधता प्राप्त होती है। झुनझुने, विविध आकारों और परिमाणों में मिलते हैं–कुछ लॉलीपॉप के आकार के होते हैं, कुछ को शिशु को आकर्षित करने के लिए पालने पर लटकाया जाता है। प्रस्तुत चित्र में हम झुनझुनों का पहला प्रकार देख सकते हैं।

8. Rattle, Grass, Uttar Pradesh

Flexible grass and stems are twisted and plaited into forms that serve specific functions. The traditional toys in India are excellent examples of aesthetic design. The basic idea of beauty and function prevails in the diversity of toys found throughout the country. The colour, shape and material which the child notices in every day objects also trains him to respond to beauty in our temples, mosques, sculptures, etc.

In India, we have a variety of rattles ranging from those made in terracotta to the ones made out of palm leaves with pebbles or seeds used to make the rattling sound. Rattles come in a variety of shapes and sizes—some have the, so called, lollypop shape and some are hung on cradles to attract the baby. In this picture, we see the former variety of rattles.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

9. खिलौना गाड़ी, काठ

विशुद्ध कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, प्रवीणता और दक्षता में भारतीय खिलौना निर्माता को पराजित करना कठिन है। भारत में विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करके विविध प्रकार के लकड़ी के बने खिलौनों की हमारी बहुत समृद्ध परंपरा रही है।

बालक के मन में यह खिलौना गाड़ी, हिन्दू मंदिरों में प्रयुक्त विशाल लकड़ी के बने उन रथों को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत कर सकती है, जिन्हें ईश की उत्सव मूर्ति की शोभा यात्रा में निकालते समय सुंदरतापूर्वक सजाया जाता है।

कुछ खिलौने बच्चों को वयस्क जीवन के लिए तैयार करते हैं।

प्रस्तुत चित्र में, काठ की बनी खिलौना गाड़ी देखी जा सकती है, जो संभवतः बालक का पहला वाहन होता है। आज भी, इसे बच्चों द्वारा यात्रियों तथा वस्तुओं को लाने ले जाने के लिए क्रियात्मक खिलौने के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

9. Toy Cart, Wood

For sheer imagination, ingenuity, dexterity and creativity, the Indian toy maker is hard to beat. In India, we have a very rich range and variety of wooden toys using different techniques. Some toys prepare the child for the world that they are to enter as they grow into adults.

In the child's mind, a toy cart may even symbolise the huge wooden chariot used in Hindu temples which are beauifully decorated when the deity is taken out in procession.

In this picture, we see a toy cart made of wood which is perhaps the first vehicle the child owns.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

10. पशु-पक्षी, काठ, ओड़िशा

इस बदलते समय में, परंपरागत खिलौनों के साथ प्रयोग करते समय अक्सर एक भिन्न प्रकार का शैक्षिक विचार खिलौनों द्वारा सिखाया जा सकता है।

प्रस्तुत चित्र में, हम परंपरागत लकड़ी के खिलौनों की शैली पर आधारित दो लटकती पट्टियां देख सकते हैं। इन्हें कक्षा अथवा घर पर प्रदर्शित किया जा सकता है और इसके लिए ज्यादा स्थान की आवश्यकता भी नहीं है। पारंपरिक खिलौनों पर भी निरंतर नवीनतम परिकल्पनाओं और रंगों पर प्रयोग हो रहे हैं, इसलिए मशीनीकरण पर बल न होकर आधारभूत कच्ची सामग्री के प्रयोग, प्रवीणता और मानव श्रम पर बल दिया जाता है।

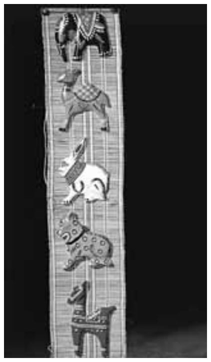

10. Birds and Animals, Wood, Odisha

Very often an educational concept can be taught while experimenting with traditional toys.

In the picture we see two hanging strips of matting on which traditional wooden figures are fixed. These can be displayed in the classroom or at home and do not require much space. As newer designs and colours are being constantly experimented with while making traditional toys, the emphasis is on innovative use of basic raw material and the skills of the craftsman rather than on mechanical perfection.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

11. दुल्हन, कपड़ा, पंजाब

प्राचीन समय से, भारत में खिलौने बनाने के लिए वस्त्रों का प्रयोग किया जाता रहा है। भारत के परंपरागत खिलौना निर्माताओं ने वर एवं वधू को खिलौनों के रूप में बनाने के लिए पुराने कपड़ों का सुन्दर प्रयोग किया है। सामान्यत: ये ग्रामीण भारत के बच्चों के प्रिय खिलौने और गौरवपूर्ण सम्पत्ति है।

प्रस्तुत चित्र में हम पूर्ण रूप से सजी-धजी, वेशभूषा से अलंकृत, उत्तर भारत की एक दुल्हन रूप को देख सकते हैं।

11. Bride, Cloth, Punjab

Cloth has been used for making toys in India since ancient times. The traditional toy makers of India have used old clothes to make dolls depicting brides and bridegrooms, they are generally the favourite toys and pride possessions of children in rural India.

In this picture, we see a bride from North India, fully clothed in all her finery.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

12. हाथी, काठ, कोंडापल्ली, आंध्र प्रदेश

भारत में काठ (लकड़ी) के खिलौनों की समृद्ध परंपरा है। भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में ऐसे केन्द्र हैं जहां इन खिलौनों का निर्माण होता है, पर इन लकड़ी के खिलौनों को निर्मित करने की परिकल्पना (डिज़ाइन) और तकनीक प्रत्येक प्रदेश में भिन्न हैं।

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले का एक छोटा गांव कोंडापल्ली, अपने लकड़ी के खिलौनों की विविधता के लिए प्रसिद्ध है। अरयाक-क्षत्रिय के नाम से जाने वाले प्रसिद्ध कलाकार ''तेल्ला पुनीकी'' के नाम से जाने वाली लकड़ी का प्रयोग करते हैं। खिलौनों को आकर्षक रंगों से सजाया जाता है। कोंडापल्ली खिलौनों की श्रृंखला में सर्वाधिक प्रसिद्ध देवताओं की प्रतिकृतियाँ होती हैं जिनमें विशेष रूप से देव विष्णु के दशावतार की प्रतिकृति है। एक अन्य लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण अंबरी या सुसज्जित हाथी का खिलौने रूप को प्रस्तुत चित्र में देखा जा सकता है।

12. Elephant, Wood, Kondapalli, Andhra Pradesh

India has a rich tradition of wooden toys. There are centres in almost every state of India which produce these toys, however, the design and technique of making the wooden toys varies from region to region.

In Andhra Pradesh, Kondapalli, a little village in the Krishna district is best known for its widest range in wooden toys. The artists who are known as *aryak-shtriyas* use a wood locally known as *tella puniki (Glotia rattle formis).* The toys are finely painted. The most famous Kondapalli toys are of deities especially the *dashavatara* set and *ambari* or caparisoned elephants, which we see in this picture.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

13. खिलौने, काठ, कोंडापल्ली, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश स्थित कोंडापल्ली में बनाए जाने वाले परंपरागत खिलौने मुख्य रूप से पौराणिक चरित्रों के इर्द-गिर्द केन्द्रित रहते हैं। हालांकि, ग्रामीण जीवन से संबंधित दैनिक जीवन के समग्र दृश्य को प्रस्तुत करते रूचिकर खिलौने भी बहुत लोकप्रिय हैं। ऐसे खिलौनो के रूप में, हम एक छोटी झोंपड़ी में स्त्री को भोजन पकाते हुए तथा घर की विविध वस्तुएं उसके आसपास रखी हुई या गाय का दूध दुहती स्त्री या भेड़, बकरी आदि की देख-रेख करते छोटे बच्चों को देख सकते हैं।

प्रस्तुत चित्र में, हम परंपरागत, वेशभूषा, में सजी-धजी चार आकृतियां देख सकते हैं। ये आकृतियां, स्वयं को तैयार करने में प्रयुक्त तकनीकी कुशलताओं के अतिरिक्त दस्तकार के आनन्द और रचनात्मकता को भी अभिव्यक्त करती है।

13. Toys, Wood, Kondapalli, Andhra Pradesh

Traditional toys made at Kondapalli, Andhra Pradesh, mainly centre around mythical figures. However, interesting toys sharing composite scenes of daily routine chores relating to rural life are also very popular. In such toys, we could see a small hut with a woman cooking and the various household implements around her or a woman milking a cow or youngsters tending sheep etc.

In this picture, we see four figures attired in traditional costume. Apart from the technical skills involved in making these figures, they also convey the joy and creativity of the craftsman.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

14. खिलौने, काठ, कोंडापल्ली, आंध्र प्रदेश

परंपरागत खिलौनों के निर्माता, लकड़ी के खंडों और विविध आकारों को सही रूप प्रदान करते समय कभी किसी आकृति को दोहराते नहीं हैं। खिलौने निर्माता हमेशा शिल्प निर्माण के नियमों और तरीकों का पालन करने की चेष्टा करता है, पर बहुत-सी वस्तुओं में हम एक विशिष्ट शैली को देख सकते हैं, जो आदिरूप से भिन्न होती है।

प्रस्तुत चित्र में, हम खड़ी मुद्रा में, छह मानव आकृतियां देख सकते हैं, जो एक ओर भारत में वेशभूषा की विविधता प्रदर्शित करती हैं तो दूसरी ओर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अनिवार्यता, प्रेम और भाईचारे की भावना को अभिव्यक्त करती है।

कलाकार ने इन आकृतियों को शिल्पीकृत करते हुए सूक्ष्मतम विस्तृत प्रस्तुतीकरण पर अति सावधानी से ध्यान दिया है।

14. Toys, Wood, Kondapalli, Andhra Pradesh

The traditional toy maker, never duplicates a figure. Though the toy maker always try to follow the rules and methods of craft making, however, in many products you can see a distinctive style which is different from the archetype.

In this picture, we see six standing human figures which, on the one hand, show the diversity of costumes in India and on the other hand, love and brotherhood—the essentials of peaceful co-existence.

The artist has given meticulous attention to the smallest detail in crafting of these figures.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

15. पवन फिरकी, कागज, दिल्ली

अपने बचपन में, हम सभी ने कागज पर चित्र बनाने के आनन्द को अनुभव किया है। आज, कागज हमारे दैनिक जीवन का एक ऐसा अनिवार्य भाग हो चुका है कि हम उसके साथ ही जीवन का प्रारूप देखते हैं। कागज को विभिन्न प्रकार से उपयोग में लाया जाता है जैसे लिखने, रेखांकित, चित्रांकित और चित्रकारी करने, शुभकामना कार्ड बनाने, ऑरिगेमी (कागज कार्य) और मुद्रण हेतु। कागज, एक उत्साहजनक और बहुमुखी शिल्प माध्यम है और यह विभिन्न संरचनाओं (बनावट) तथा रंगों में उपलब्ध है। बेकार कागज का उपयोग करते हुए बच्चों को विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाने के कार्य में सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत चित्र में कागज के लोकप्रिय (प्रचलित) खिलौने देखे जा सकते हैं, जो प्रमुखत: मेलों में ही बेचे जाते हैं। इन खिलौनों को कारीगर बनाते हैं और इन खिलौनों को बनाना किशोर बच्चों को सिखाया जा सकता है।

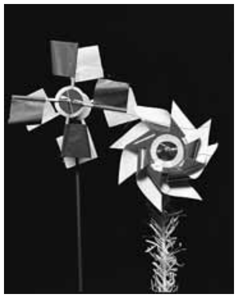

15. Wind Mill, Paper, Delhi

In our childhood, we have all experienced the joy of making drawings on paper. Today, paper is so much a part of our day to day life that we tend to take it for granted. It is used for a variety of purposes such as for writing, drawing and painting, making greeting cards, Origami and, of course, for printing. It is an exciting and versatile craft medium and is available in different textures and colours. Creative activities using waste paper involve the children in producing a variety of toys.

This picture shows popular paper toys which are sold mainly at the fairs and *melas.* They are made by artisans and can easily be made by young children.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

16. पक्षी, कागज, दिल्ली

शिल्प के रूप में खिलौने बनाना सीखना और फिर उन्हें बनाते रहना आसान है। भारत के सभी परंपरागत खिलौने विज्ञान और तकनीक की संकल्पनाओं से बहुत ही निकट से जुड़े हुए हैं और कक्षा की पढ़ाई में शैक्षिक सहायक सामग्री के रूप में इनका बहुत प्रभावी उपयोग है।

खिलौने बनाने में (खिलौनों में) एकाधिक वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग होता है और अध्यापकों द्वार चर्चाओं आदि के माध्यम से इन सिद्धांतों को समझने और समझाने के लिए कक्षाएं श्रेष्ठ स्थान हैं।

चूंकि कागज एक सस्ता, आसानी से उपलब्ध और खेलने के लिए सुरक्षित सामग्री है, अतः बच्चे को सीखने का आनंद प्रदान करने के लिए बेकार कागज के रचनात्मक उपयोग पर प्रयोग किए जा रहे हैं।

प्रस्तुत चित्र में आप कागज से बना एक पक्षी देख सकते हैं, जिसे सरल यान्त्रिकी सिद्धांतों के आधार पर बनाया गया है।

16. Bird, Paper, Delhi

Toy making as a craft is easy to learn and practice. All traditional toys in India are very closely associated with the concepts of science and technology and have great potential as educational aids in classroom teaching.

Toys use more than one scientific principle and the classroom is the best place to understand these through discussions initiated by the teacher.

Since paper is an inexpensive, easily available and a safe material to play with, experiments have been conducted to give the joy of learning to a child through creative use of waste paper.

In this picture, you can see a paper bird which involves simple mechanical principles.

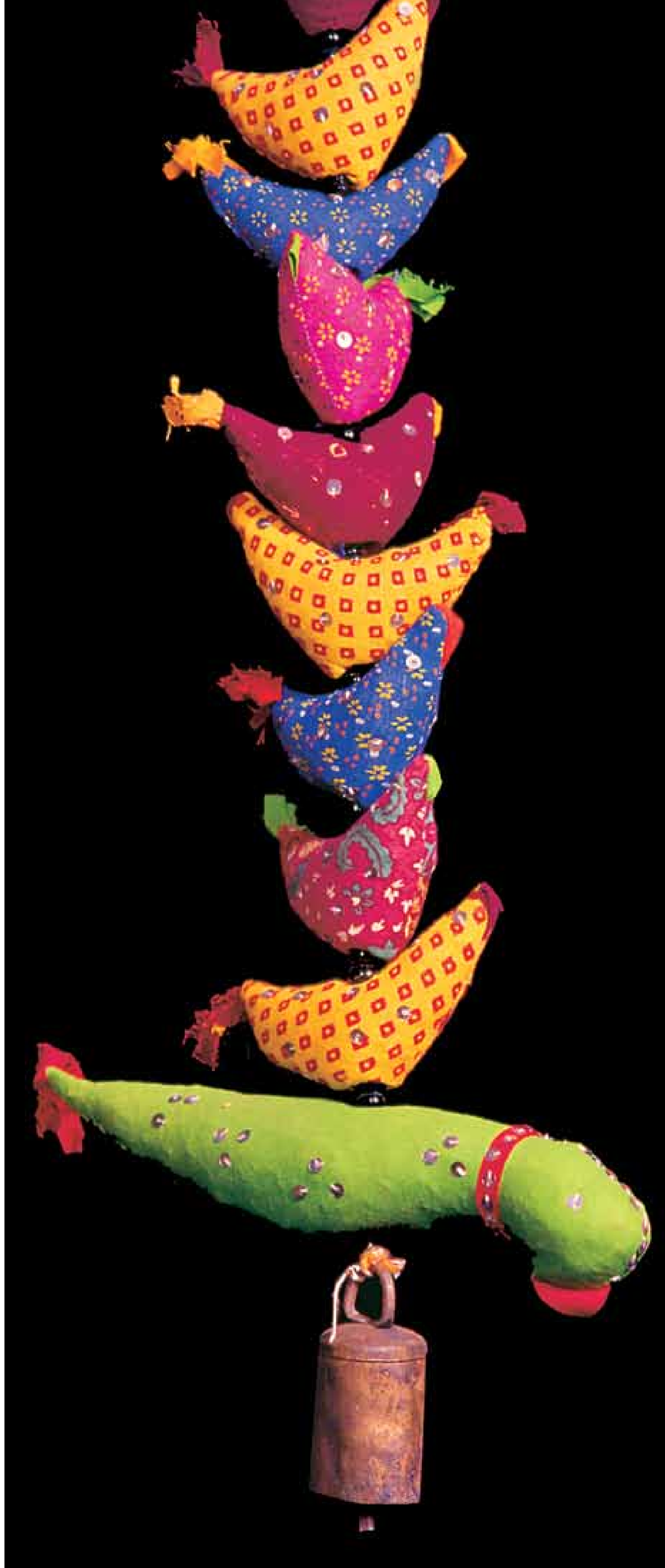

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

17. निलंबी (लटकाने वाले) खिलौने, कपड़ा, गुजरात

गुजरात में, मंदिर में भेंट स्वरूप अर्पित करने के लिए भक्तजनों हेतु द्वार पर लटकाए जाने वाले खिलौने बनाए जाते थे। गुजरात का काठियावाड़ जिला दीवारों पर सजाने के लिए बनाए जाने वाले तोरणों के लिए प्रसिद्ध है। यह तोरण घर में आए मेहमानों का स्वागत करते प्रतीत होते हैं।

परंपरागत रूप से, यह काम स्त्रियों द्वारा किया जाता है और इन तोरणों में अतिप्रिय पशुओं, पक्षियों और फूलों की शृंखला अभिव्यक्त होती है। घंटियों और मनकों के काम सहित ये सभी लटकाए जाने वाले खिलौने, एक जीवन्त अन्त:स्थल प्रस्तुत करते हैं और साधारण से लगने वाले घर को भी सुन्दरता तथा मनोहारिता से भर देते हैं। लटकाए जाने वाले खिलौने, बालक के झूले (पालने) के ऊपर टांगे जाने पर शिशुओं को आनंद की अनुभूति प्रदान करते हैं तथा स्वरूप, रंग और गति द्वारा उन्हें विस्मित करते हैं।

17. Hanging Toys, Cloth, Gujarat

In Gujarat, door hangings were made for devotees for offering as gifts to the temple. Kathiawar in Gujarat is famous for its *torans*—wall hangings which welcome visitors to the home.

Traditionally, the work of making cloth toys has been done by women and it depicts the series of much loved animals, birds and flowers. All these hanging toys, in combination with bells and bead work produce a sparkling interior, bringing beauty and grace into the humblest home. These hanging toys also known as mobiles bring to the child in the cradle, his first glimpse of the joy and wonder in form, colour and movement.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

18. ऊंट, कपड़ा, गुजरात

परंपरागत भारतीय खिलौने सदैव बच्चों की कल्पना शक्ति को प्रोत्साहित करते हैं और इस प्रकार अनजाने ही बालक इनमें प्रयुक्त सरल शैक्षिक विचारों को आत्मसात भी कर लेता है। जीवन के सच और साधारणता (सरलता) से लेकर स्वैर कल्पना (स्वप्न चित्र) और कपोल-कल्पना के रूप में अभिव्यक्ति के प्रकार सदैव आधुनिक रहते हैं, क्योंकि इन पर समय का प्रभाव नहीं होता।

सिंध और गुजरात क्षेत्र, आकर्षक डिज़ाइनों (परिकल्पनाओं) और कढ़ाई किए गए आवरणों से सजे विविध प्रकार के भराव युक्त खिलौने बनाने के लिए प्रसिद्ध है।

भरावयुक्त खिलौना, अपने मुलायम, लचीले स्वरूप तथा उस पर प्रस्तुत कढ़ाईयुक्त नमूनों के कारण कलाकारों की दक्षता और कुशलता को प्रदर्शित करता है।

18. Camel, Cloth, Gujarat

Indian toys have always encouraged the imagination of the child and unconsciously the child learns simple educational concepts. The form of expression ranging from realism and simplicity to fantasy and abstraction is as modern as it is timeless.

The area of Sind and Gujarat is famous for producing a variety of stuffed toys covered with rich designs and embroidery.

The stuffed toy, because of its soft flexible form, and the embroidered motifs, portrays the refinement and skill of the artist.

153

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

19. गुड़िया, कपड़ा, लद्दाख, जम्मू और कश्मीर

पुराने वस्त्रों और चिंदों से बनी पशु आकृतियों के खिलौनों और गुड़ियाओं को सामान्यत: ''भरावयुक्त खिलौने'' या ''कपड़ा गुड़िया'' कहा जाता है। ये आकृतियां भारत के सभी भागों में बनाई जाती हैं और इन खिलौनों को बनाने में स्त्रियां विशेष कुशलता रखती हैं।

अत्यंत विविध प्रकार की वेशभूषाएं तथा रंगों को प्रदर्शित करती गुड़ियाएं सामान्यत: किसी न किसी काम में व्यस्त घर के दृश्य को प्रदर्शित करती हैं।

प्रस्तुत चित्र में हम याक पर बैठी हुई लद्दाख की परंपरागत वेशभूषा में सजी कपड़े की गुड़िया को देख सकते हैं। परंपरागत खिलौने किसी स्थान विशेष के जन-जीवन और संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

19. Doll, Cloth, Ladakh, Jammu and Kashmir

Animal figures or toys and dolls made out of remnants of old clothes and rags are usually known as ‘stuffed toys’ or ‘rag dolls’. These figures are made in all parts of India, women specialise in making these loys.

These dolls, which show a great variety of costumes and colours, are generally shown engaged in one job or the other.

In the picture. we see a cloth doll wearing the traditional costume of Ladakh sitting on a Yak. Traditional toys also help in learning about the life and culture of a particular place.

20. मछली, काठ, ओड़िशा

परंपरागत खिलौने बनाने में प्रयुक्त प्रत्येक सामग्री की बनावट, स्वरूप और अभिक्रिया का अपना सौन्दर्य होता है। उदाहरण के लिए लकड़ी (काठ) और मज्जा कार्य, कुछ हद तक कोणीय आकृतियां निर्मित करता है, जबकि मिट्टी से बनी आकृतियों में अत्यधिक सुघट्यता होती है।

ओड़िशा के काठ से बने खिलौनों के दो प्रसिद्ध केन्द्र हैं–संबलपुर जिले का बर्गा नामक स्थान और पुरी। पुरी में बने खिलौने अपने चमकदार रंगों और विशिष्ट दिखाव-बनाव एवं आकर्षक रूप रंग के कारण बहुत लोकप्रिय हैं जबकि बर्गा में निर्मित खिलौने मन्द रंगों से चित्रित किए जाते हैं।

प्रस्तुत चित्र में, हम ओड़िशा स्थित पुरी में मछली के बने खिलौने प्रतिरूप को देख सकते हैं।

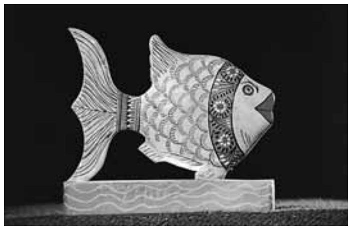

20. Fish, Wood, Odisha

Each material used in traditional toy making has its own beauty of texture, form and style of treatment. Wood and pith work, for instance, to some extent create angular figures, whereas a doll made out of clay has great plasticity.

Burgarh in Sambalpur district and Puri are two famous centres of wooden toys in Odisha. The animal toys made at Puri are very popular because of their bright colours and unique appearance whereas the toys made at Burgarh are painted in muted tones.

In this picture, we see a toy model of a fish made at Puri, Odisha.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

21. नर्तकी, मणिपुरी

भारत के परंपरागत खिलौनों में एक प्रकार का आकर्षण, मौलिकता तथा चित्तकर्बिता प्राप्त होती है। आज देश भर में खिलौने और गुड़ियाऐं बनाई जाती हैं।

मणिपुर की गुड़ियाओं को रास नृत्य की परंपरागत वेशभूषा पहनाकर, घूंघट (आवरण) तथा परंपरागत आभूषणों सहित सुन्दरतापूर्वक तैयार किया जाता है। शारीरिक मुद्रा स्त्री कलाकार को सामान्यत: नृत्य की मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। इन गुड़ियों को स्पन्दनशील रंगों में बनाया जाता है और ये सभी को मोहित करती हैं।

प्रस्तुत चित्र में हम मणिपुर की परंपरागत वेशभूषा में सजी गुड़िया देख सकते हैं। मणिपुर, अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, मेहनती लोगों, परंपरागत खेलों, भक्ति संगीत और विविध प्रकार के नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है।

21. Dancer, Manipuri

Traditional toys in India have charm, beauty and originality.

The dolls of Manipur are beautifully prepared wearing traditional costumes of the Rasa dance, complete with the veil and traditional jewellery. The body posture generally shows the female in a dancing position. The dolls are made in vibrant colours and fascinate one and all alike.

In this picture, we see a doll in the traditional Rasa costume of Manipur. Manipur is known for its natural beauty, hard working people, traditional sports, devotional music and its variety of dances.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

22. वृषभ, ढोकरा, धातु कार्य, ओड़िशा

भारत में शताब्दियों से धातु कार्य किया जा रहा है। सिंधु सभ्यता की खुदाई में प्राप्त नृत्य करती लड़की अथवा कांस्य की बने वृषभ की प्रतिकृति, धातु शिल्प के पुराअवशेषों का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। बच्चों के लिए प्रौढ़ विश्व की पुनर्रचना के क्षेत्र में, धातु एक बहुत ही टिकाऊ माध्यम रहा है। भारत के जनजातीय क्षेत्रों में, धातु के खिलौने बनाए जाते हैं और बनाए गए कोई भी दो खिलौने एक जैसे नहीं होते, क्योंकि प्रत्येक खिलौने को बनाने के लिए नए सांचे का इस्तेमाल किया जाता है। मोर, गिरगिट, नाग, केंकड़ा, घोड़ा, हिरण और पशु जगत के अन्य सदस्यों की आकृतियां इस शैली से तैयार की जाती हैं। मानव आकृतियां भी बनाई जाती हैं तथा ऐसी प्रत्येक आकृति एक अनूठे सौन्दर्य को प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत चित्र में, ओड़िशा में धातु विशेष से बनाए जाने वाले खिलौने वृषभ को देख सकते हैं।

22. Bull, Dhokra, Metal work, Odisha

Metal casting has an ancient tradition in India. The dancing girl or the bull made out of bronze found in the excavations of the Indus Civilization are testimony to the antiquity of the craft. In recreating the adult world for children, metal has been a very durable medium.

In the tribal areas of India, a variety of metal toys are produced and no two toys are identical. The reason being that each toy is cast using a new mould. The figures include peacocks, chameleons, cobras, crabs, horses, deer and other friends from the animal kingdom. Human figures are also made. Each piece is an object of great beauty.

In this picture, you see a toy bull made of bell metal in Odisha.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

23. पक्षी, सीपी शिल्प, गोवा

तटीय राज्य और संघ शासित प्रदेश लगभग सभी प्रकार की उपलब्ध सामग्री-मिट्टी, वस्त्र और प्राकृतिक रेशों से बनाए जाने वाले खिलौनों का एक समृद्ध परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। भारत के समुद्र तट के आस-पास सभी प्रकार के आकार और रंगों की सीपियां प्राप्त होती हैं।

एक-दूसरे के साथ जोड़ी गई, बड़ी स्वतंत्र सीपियों एवं छोटी सीपियों से बने पशु आकृतियों रूपी खिलौने सस्ते और बनाने में आसान होते हैं। स्पंदनशील रंगों से रंग दिए जाने के पश्चात् सीप शिल्प से बने ये खिलौने इस बात का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि प्राकृतिक जीवन के स्पंदन सहित सुन्दर वस्तुओं को निर्मित करने के लिए किस प्रकार प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है।

23. Birds, Shells, Goa

The coastal States and Union Territories provide a rich panorama of toys made out of almost every conceivable material—clay, cloth and natural fibres. Shells of all shapes and hues are also found all along the sea coast of India.

Shell toys, consisting of either large individual shells or small ones struck together to form figures of animals are cheap and easy to make. Shell toys are an example of how nature's gift can be used to create beautiful objects which have the vibrancy of natural life.

पारम्परिक खिलौने
Traditional Toys

24. पशु, कांच, उत्तर प्रदेश

कांच, मानव द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली सर्वाधिक सुन्दर सामग्रियों में से एक है। कांच के अस्तित्व का संदर्भ हमें महाकाव्य महाभारत में भी प्राप्त होता है। प्राचीन समय में कांच की शानदार, सुन्दर वस्तुएं बनाई जाती थीं। ये वस्तुएं हमारे कारीगरों की श्रेष्ठ कुशलता और सर्जनात्मकता का प्रमाण हैं। भारत में कई स्थानों पर कांच का निर्माण किया जाता है और विविध प्रकार की वस्तुओं को निर्मित किया जाता है। अपनी सुन्दर चमक और खंडित होने की प्रकृति के कारण कांच से बनने वाले खिलौनों को सावधानी से प्रयोग में लाया जाता है और सभी इनकी प्रशंसा करते हैं।

कांच उद्योग ने विभिन्न रंगों और परिकल्पनाओं (डिज़ाइनों) में आकर्षक लघु रूप खिलौने निर्मित किए हैं। प्रस्तुत चित्र में हम कांच के बने कुछ जानवर (पशु) देख सकते हैं।

24. Animals, Glass, Uttar Pradesh

Glass is one ot the most beautiful materials invented by man. The existence of glass has been referred to in the epic, Mahabharata. It is a testimony of the perfect skill and creativity of our artisans that beautiful articles of superb quality were made of glass in olden times. Glass is made in many centres in India and articles of a varied nature are produced. Considering its beautiful shine and fragile nature, the toys made out of glass are delicately handled and appreciated by one and all.

The glass industry has produced attractive miniature toys in different colours and designs. In this picture, we see a few animals made of glass.